



story
weaver

दीदी का रंग बिरंगा खज़ाना

Author: Rukmini Banerji

Illustrator: Kaveri Gopalakrishnan

पठन स्तर २



एक बड़े शहर के किनारे कुछ बच्चे रहते थे। उनके घर के नज़दीक एक बड़ा मैदान था। मैदान अजीब क्रिस्म का था। वहाँ ना पेड़ थे, ना पौधे, बस कचरा ही कचरा था। पूरे शहर की फेंकी हुई चीज़ें और गन्दगी से भरा हुआ रहता था।



वे बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। पूरा दिन मैदान में घूमते थे।
प्लास्टिक की बोतलें खोजते थे। कपड़े के टुकड़े निकालते थे...
कचरे के बारे में वे बहुत कुछ जानते थे।



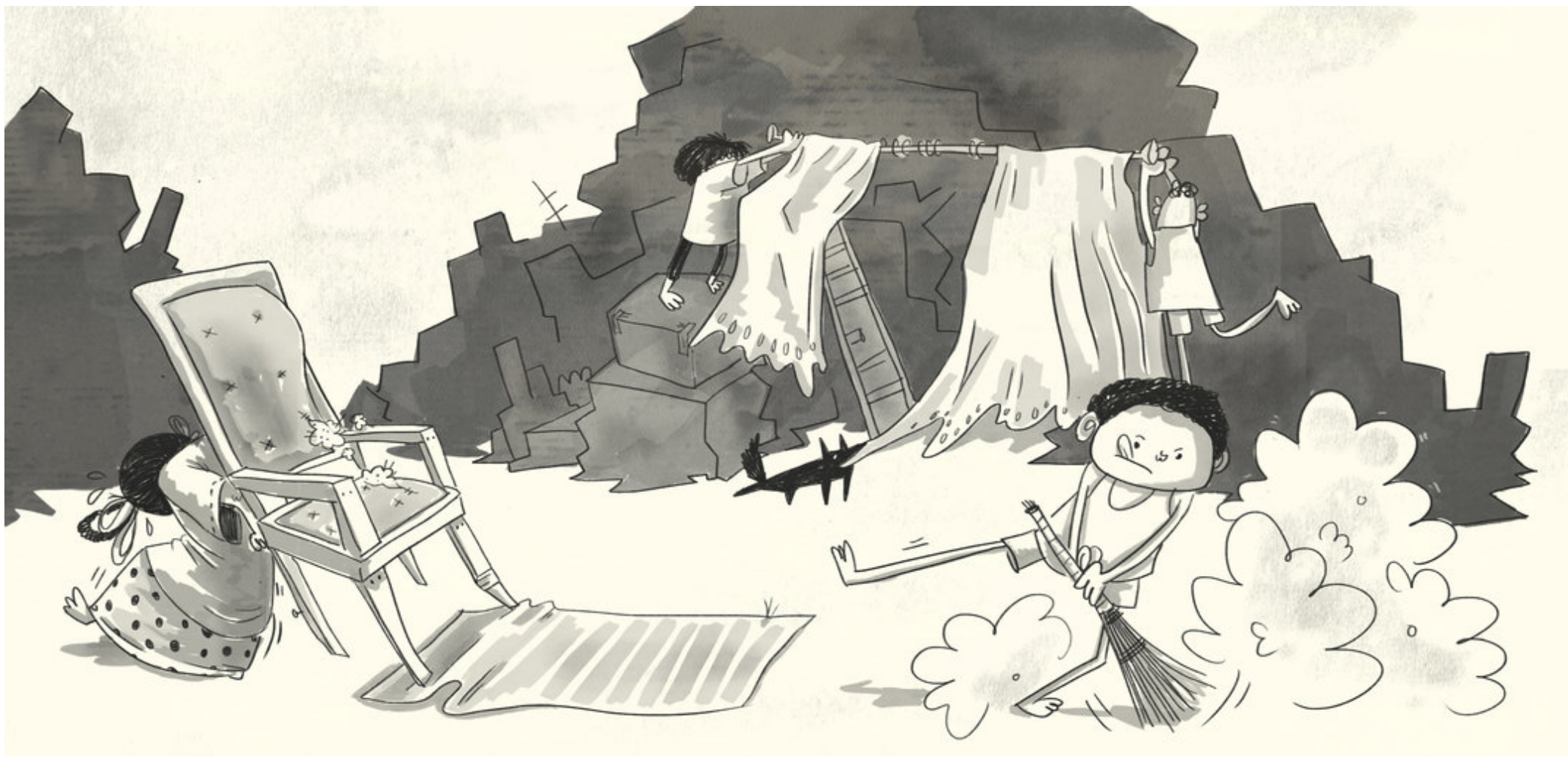
एक दिन दीदी कचरे के मैदान में आई। गले में लाल दुपट्टा ओढ़े हुए थी।
घूमते फिरते बच्चों की तरफ ताकते हुए वह एक जगह पर बैठ गई।
अपने थैले से कुछ निकाल कर देखने लगी।



पहले बच्चे दूर से घूर रहे थे। फिर थोड़ा करीब आ कर देखने लगे।
दीदी के पास खूब सारी किताबें थीं। मोटी, पतली, रंग बिरंगी, कहानियों से भरी हुई किताबें।
बच्चे और पास पास आते गए।



दीदी रोज आने लगी। बच्चे भी दीदी के पास आने लगे।
दीदी से खूब कहानियाँ सुनने लगे। कुछ दिनों में वे अक्षर और शब्द पढ़ने लगे।
धीरे धीरे कहानियाँ बताने लगे।



चलो दीदी की जगह को खूबसूरत बनाएं। बच्चे कचरे से एक कुर्सी-टेबल ले आए।
कोई गलीचा लाया, कोई पर्दा। कहीं से कुछ सामान का टुकड़ा लाया, जो भी कचरे में पाया।



एक दिन दीदी नहीं आई। अगले दिन भी नहीं आई। परेशान बच्चे इंतज़ार करते रहे।
बातों बातों में किताब पढ़ने लगे। अपने आप पढ़ते पढ़ते औरों को पढ़ाने लगे।

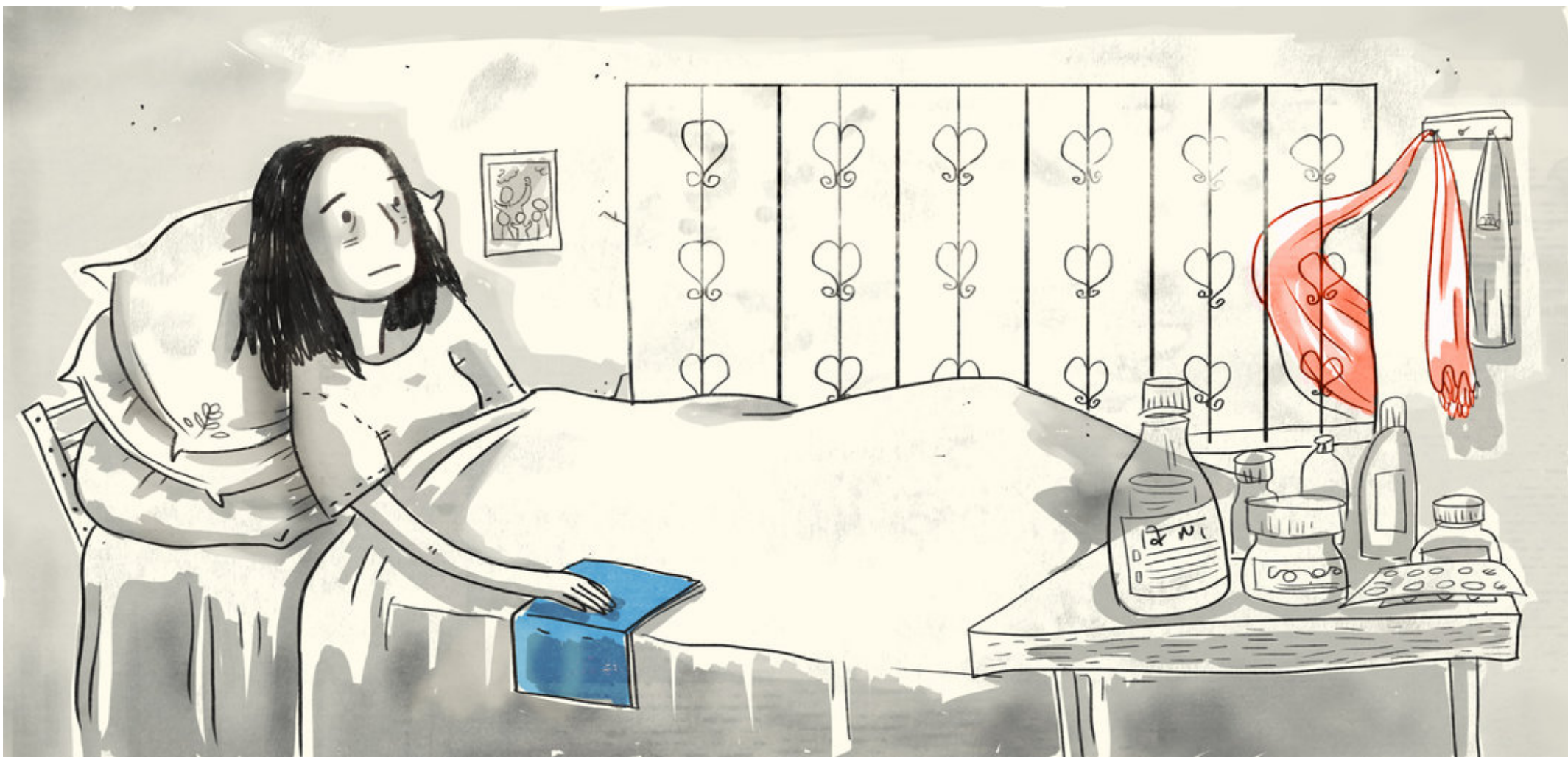


एक दिन उन्हें दीदी का पता किताब में मिल गया। बच्चे तुरंत दीदी की खोज में निकल पड़े। साथ में किताबों का थैला उठाना नहीं भूले। खोजते खोजते बच्चों ने एक बस का नंबर पढ़ लिया। चलते चलते उस सड़क का नाम समझ लिया। क्योंकि दीदी ने उन्हें सब सिखाया था।



दीदी का घर कहाँ है? इधर है कि उधर है?

खोज खोज कर बच्चे परेशान हो गए। थक कर वापस जा ही रहे थे कि किसी ने एक लाल दुपट्टा देखा।



दीदी बिस्तर पर लेटी थी। बीमार और उदास दिख रही थी।
चेहरे पर न कोई मुस्कान, न कोई चमक थी। डॉक्टर ने दवाई दी थी।
पर दीदी ठीक नहीं हो रही थी।



बच्चे दौड़ कर वहाँ पहुंच गए। दीदी को एक दम गले लगाया।
किताबों का थैला उन्हें दिखाया। बच्चों ने कुछ पढ़ कर सुनाया।
दीदी फिर से मुस्कुराने लगी। उनकी आँखों की चमक वापस आने लगी।



अब दीदी फिर से आने लगी है। सभी बच्चे इकट्ठे होने लगे हैं।
रोज़ शाम को मिलने लगे हैं। खूब हंसने और पढ़ने लगे हैं। मिल कर मौज मस्ती करने लगे हैं, बच्चे,
दीदी और उनकी किताबें!

Story Attribution:

This story: दीदी का रंग बिरंगा खज़ाना is written by [Rukmini Banerji](#) . © Storyweaver, Pratham Books , 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

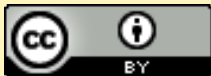
Other Credits:

This story was first published on StoryWeaver. It was created as part of StoryWeaver's 'Weave-a-Story' campaign which focussed on translating stories into as many languages as possible. <https://storyweaver.org.in/>

Illustration Attributions:

Cover page: [A woman and a group of children having a fun time reading](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: [Children living close to a garbage dump](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: [Children carrying boxes, bags and sacks](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: [Children looking at a woman walking by](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: [Woman reading a book, children watching curiously](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: [Woman and children engrossed in books](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: [Children cleaning and decorating](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: [A group of children reading](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: [Children waiting at a bus stand](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: [Four children grabbing a red shawl](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: [An unwell woman](#) by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions



Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

Illustration Attributions:

Page 12: [Children reading out to a smiling woman](#), by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: [Happy children and woman surrounded by books](#), by [Kaveri Gopalakrishnan](#) © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions



Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

दीदी का रंग बिरंगा खज़ाना

(Hindi)

कचरे के ढेर से घिरे हुए बच्चे मौज मस्ती कैसे करें? लेकिन एक दिन कहीं से दीदी आई और बच्चों के जीवन में रंग लाई। किताबें जो उनकी दोस्त हो गईं।

यह पठन स्तर २ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो सरल शब्द पढ़ लेते हैं और थोड़ी मदद से नए शब्द भी पढ़ सकते हैं।



Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!